"भय"

• बिन गुर कोई न रंगीऐ - गुरू मिलिए रंग चड़ाउ । गुर के भै भाइ जो रते सिफती सच समाउ ।

अर्थ:- हे भाई ! गुरु की शरण पड़े बिना कोई मनुष्य नाम रंग से रंगा नहीं जा सकता, अगर गुरु मिल जाए तो ही नाम रंग चढ़ता है । जो मनुष्य गुरु के भय - अदब से गुरु के प्रेम के द्वारा रंगे जाते हैं, महिमा की इनायत से सदा स्थिर प्रभु में उनकी लीनता हो जाती है ।

भै बिन लागि न लगई ना मन निरमल होइ । बिन भै करम कमावणे झूठे ठाउ न कोइ ।

अर्थः- हे भाई ! डर - अदब के बिना मन रूपी कपड़े को पाह नहीं लग सकती पाह के बिना मन - कपड़े को पक्का प्रेम रंग नहीं चढ़ता मन साफ - सुथरा नहीं हो सकता । इस डर - अदब के बिना निहित धार्मिक कर्म किए भी जाएं तो भी मनुष्य झूठ का प्रेमी ही रहता है, और झूठे को प्रभु की हजूरी में जगह नहीं मिलती ।

जिसनो आपे रंगे सु रपसी सतसंगत मिलाइ । पूरे गुर ते सतसंगत ऊपजै सहजै सच सुभाइ । (3-427)

अर्थः- हे भाई ! साध - संगत में ला के जिस मनुष्य के मन को परमात्मा स्वयं ही नाम रंग चढ़ाता है वही रंगा जाएगा । साध - संगत पूरे गुरु के द्वारा ही मिलती है जिसे मिलती है वह आत्मिक अडोलता में, सदा स्थिर प्रभु में, प्रभु प्रेम में मस्त रहता है ।

- मनमुख मन अजित है दूजै लगै जाइ । तिस नो सुख सुपनै नही दुखे दुख विहाइ ।

अर्थः- मनमुख का मन उसके काबू से बाहर है, क्योंकि वह माया में जा लगा है नतीजा ये कि उसे सपने में भी सुख नहीं मिलता, उसकी उम्र सदा दुख में ही गुजरती है ।

घरि घरि पड़ि पड़ि पंडित थके सिध समाधि लगाइ । इहु मनि वसि न आवई थके करम कमाइ ।

अर्थः- अनेक पडित लोग पढ़ - पढ़ के और सिद्ध समाधिया लगा - लगा के थक गए है, कई कर्म करके थक गए हैं पढ़ने से और समाधियों से ये मन काबू नहीं आता ।

भेखधारी भेख करि थके अठिसठि तीरथ नाइ । मन की सार न जाणनी हउमै भरमि भुलाइ ।

अर्थः- भेख करने वाले मनुष्य भाव, साधु लोग कई भेस करके और अढ़सठ तीर्थों पर नहा के थक गए हैं अहंकार व भ्रम में भूले हुओं को मन की सार नहीं आई ।

गुरपरसादी भउ पइआ वडभागि वसिआ मनि आइ । भै पइऐ मन वसि होआ हउमै सबदि जलाइ।

अर्थः- बड़े भाग्यों से सतिगुरु की कृपा से भउ उपजता है और मन में आ के बसता है हरि का भय उपजते ही, और अहंकार सतिगुरु के शब्द से जला के मन वश में आता है ।

सचि रते से निरमले जोती जोति मिलाइ । सतगुर मिलिऐ नाउ पाइआ नानक सुखि समाइ । (3-644-645)

अर्थः- जो मनुष्य ज्योति रूपी प्रभु में अपनी तवज्जो मिला के सच्चे में रंगे गए हैं, वे निर्मल हो गए हैं पर हे नानक ! सतिगुरु के मिलने से ही नाम मिलता है और सुख में समाई होती है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"